

शृंगार सहित श्रीगुरुजी शय्यापर विराजे। गुसाईं बालक तथा नहकै
 भेट करे तो पीछे शृंगार बजे होइ श्रीगुसाईंजी नारी चौकी पै विसाज के
 डोल तिनारी के बीच के द्वार में चौकी रहै शृंगार गादी को फोरना को बजे
 होइ जोड बजे होइ कुलह को शृंगार रहै कुंडल वसर श्रीहस्त के पुल
 हत सावला मादिका रहै श्रीवत्स में वज्र भरण लड़ हांस कदल त्रिवल
 हीरा को ताइत चौकी रहै दाद घाटिका रहै घाटिका बजे होइ जोडी
 की माला हरी मणीन की धरे नागा रहै ओदनी ओद शय्या के चोरसा
 उठे ओदनी शय्या प पाइत की आजी श्रीगुरुजी विराजे दंडवत
 करे श्रीगुरुजी के पादों के गादी के शय्या के आगे तकिश सुलगा-
 य के धरे बीच में चौपड मंडे आस पास ४ तकिश रहै गादी पै जोड
 नी धरे माला पास धरे बीज नित्य के तथा उत्सव के २० सिंकोली में
 धरे वरास को प्याला फूल दान धरे अरु गजा की वरनी गुलाब जल
 की सोसी आवखास कुंजा श्रीजमुना जल के जरी के कागा वरन बडे वख
 नये भये होइ तिन कुं अतर समर्प के पास धरे चुनने नही शय्या
 के नीचे आभरण के कलमदान जागे कुं त्रिधौ तामे भेट के रूप ना
 रहे आगे

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

शय्या को साज शय्या के पास रहै झारी नित्य को वल मिगई थार
 दुध घर की सामग्री केशरी पेडा १ वरपौ नारों धौ गुंजिया और खेत
 में पेडा वरपौ नारों ही गुंजिया दुध पुरी मलाई मीवे दही माखन मि
 श्री हांडी दधकी

अन संखडों में बीज के लड्डुवा बूंदी के लड्डुवा शिखरन बजे नाली
 सब तरह की कदली फलादिक लेने मिरन कुरा उत्सव को सधाना सांग
 नही एक थारी गुलाब पाक की तिल की रोये साबो नो की रेवडी की दम
 दा की सुठेले की तिन गुनी की पाणी वदाम इलाइची दाना पगे पेय
 पाक रंग मेवा एक थार में हेलन की रस सोरा मेवा सब तरह के
 वदाम मिश्री की उली दारु दुहारा मीरी

भोग अनुसार जल की चपटी या १ वा २ में रूप की क्येरी धरे
 अन्न कट के दिन मंगल आरतो भये पीछे शृंगार बजे होइ के स्नान
 होइ शृंगार दिवारी को श्रीमस्तक पै कुलह को पान हीरा को गोक्षी

धरें प्राचीन हमेल फाँदनाकी तथा गादीकी नही धरें ताडतनकी हमे
ह धरें कमल पत्र सगरे वैष्णु हीराकी वेन जज्ज गोपी बल्लभमें आ
खो पाटिया मीये शाक उत्सवको संधाना पुलनामे वदाम मिश्री की
डेही सेव

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

राज भोगमें हांडी नही दधको कवरा गोपाल बल्लभमें धांसके
लडुना चोरको खोर दनी मित्यसु बडाको छछको चपाटिया उल
वको संधाना छडियलदर तीन कुडी पापड तिलकडी ढकरो कचारे
सानसी थारी वडी के शाक उत्सवनामे चालनी वदाम मिश्रीकी कवरी
रुज भोग आरती होइ गोवर्द्धन पूजाक पधारें नोडेलमें विराजने
घास छोटे गुरजी विराजे श्रीगिरि राजजी विराजे छोटे पीतांबर
बिछाईके वरासकी वंदी धरें श्रीगुरजीके वाम ओर जोदनी पे
गाथ खिलोवेका पीतांबर दोहरो करके धरें जेवनो ओर वेन धरें
संगचले कीर्तनियां समाज सहित आगे कु गुलाल अवीरकी चालनी
मडती जाय श्रीजमुना जलको शरी १ त्रिधे पंखा मुग छंगीर
वीडी आरोगे पधारें वीडो आरोग चुके हांडी आरोगें हांडी
आरोग चुके वीडो आरोग श्रीगिरि राजकु पधारें पीतांबर विष्ण
युके तिलक अक्षत तुलसी समये आचमन प्राणायाम संकल्प
आचमनके भावसु कानकु हात लगावे गंगा विष्णु हरि कहंके
संकल्प ॐ विष्णु विष्णु विष्णु रित्यादि अमुक संवत्सरे दक्षिणायने
शरद ऋतु की कार्तिक मासे शुक्ल पक्ष प्रतिपदि शुभतिथी शुभवास
शुभवक्षेत्र शुभ योग शुभकरण एवं गुण विशेष विविधियां
श्रीमन्नन्द राज कुमार स्थाभ्युदयार्थ गोवर्द्धन पूजन सह करिष्ये
गोवर्द्धन पूजा होइ प्रथम स्नानसु स्नान संस्कार करावे
फेर दधसु नही सु तामीले अरगजसु जलसु हरी
छांटके कंकु छांटें कुंड नारो भोग आवो तुलसी शंखोदक धूपदे
प होइ गोवर्द्धन पूजा होइ चुके छ वीडो आधी रहे नोडेल
पधारें रस्तामें वीडो आरोग चुके नोडेल पर फूलन की वृष्टि हो
इ निज मंदिरमें आगे नोडेल धरे आरती चुनके होवलाकी कंकु
के अष्टदलकी उतरे नोडेल सु उतरके श्रीगुरजी सिंहसन पर

www.vallabhacharya-agraha.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushimargiya Research Portal)

Shri Tatil Maharaj Ki Pustak

Sanskrit

Shrimad Gokulnathji Mahasabha

Mota Mandir

विराजे माला पहरे शीतल भोग धरे शारी जमुनाजलकी भरे शीतल भोग सरे अनसखजी भोग आवे

सामग्री चुरी छुवे सकरपारा फेणी श्वेत फेणी केसरी वावर श्वेत वावर केसरी मेण्डी गुंझा करवे लडुवा सेक्के लडुवा मंगोहरके सरमज जलेबी मंगाये इंदूरसा कपूर नाजे रंगीर चोखाकी संजा वकी सेरकी मणकाकी सुहारी देऊ खांडकी सीरा खली मालपुवा पुना गुदजीया शिररन वजी विलसा लू केलाकी विलसा लू करोदाकी मीमे शाक पेयकी मीमे शाक फुटकी चकुली सेव दूधचरकी सामग्री दूधकी हांजे दूध पूरी मलाई पेडा केसरी तथा श्वेत वरपी केसरी तथा श्वेत गुंझिया केसरी तथा श्वेत खट्टे मीठे दही मारनमिश्री

सधाने के कुंड ना चपटीया कैरीको सधाना नीबुको सधाना आरा को सधाना टेंवीको सधाना उत्सवको सधानाको कुंडा होणको कुंडा मिरचकी कुंडेली वूराकी कुंडेली कदली फलादिक मारनको कुंडा मिश्रीको कुंडा धात्रीकी चपटीया १ वा १ नमकी चपटीया २ वा २ सखडीमे पांची भात सेव बुली चणा भात भात मूंग दार चणाकी वृजरी मूंगकी उडदकी कड़ी तीव कुडा पापड कचरिया सब तरहकी तिलवडी देवरी मिरचफूल शाक भुजेना कदके तथा कटु अनुसार भाजी शाक सब तरहके होय उरसा होय बडा होय मंगोख होय खीरे रोइ शाक प्याज वडाकी मुमोजकी सेक्की बूरीकी सयता केबाको मोल्हाको बूरीको फुटको

॥ कार्तिक सुद ३ ॥

भाई दुज अभंग होइ श्रीमसायको बाग उलजीको ओदनी श्री महा प्रभुजीको लालचरीको ओदनी श्रीमस्वरूपर छप्पेदार चीरा हरी जोडी शृंगार हलको चंद्रिका सादा

श्री गोपीबल्लभमें खिचडी चोखा मूंगकी आरोगे आदाजरे उसांती कुडा पापड मिरच फूल कचरिया नकी थारी छेके शाक २ अनसरवडीमें मीमे शाक गुडकी कवेरी पलनामें उत्सववन्दनम मिश्री

राजभोगके समय धार सानके आगेके त्रमचा धरके आरती प्रगवी
जाय झालर चंय शंखनाद कीवन होय दंडवत करके विलक करे
अक्षत चोटें बीजा २ छोटे गङ्गुरजीकुं तिलक करे श्रीमहा प्रभुजीकुं
नहीं मटिया वरके आरती उतारे नौखावर करे
संखजीमे छडी बलदार पकोड़ीकी कढ़ी तिलवडी देवरी रूपरीया
दही भात पापड मीगे शाक आधो पाटिया बड़ेके साक २
अन संखजीमे हांडी मलठा दूधके गोपालवल्लभमे मनीहरके लडुवा
उत्सवको (संध्या सांजावरी स्नान नुडकी छछके उपरा गुडकी
करोरी

अन्नकूट और भाईदूजके बीचमें साली रिन होय वो रूपहरी
जरीके वस्त्र गोल चौरा जोड़ी हरी वा लाल गोपालवल्लभमे दहीकी
सेबके लडुवा छडी बलदार पकोड़ीकी कढ़ी पापड

॥ कार्तिक सुद ८ ॥

गोपाष्टमीकुं शृंगार रेशमी लाल छापाको वागा ओदनो लाल
अरीकी तापे लाल दरियाई रो मीठाकर ओढ़े हीरकी मुकुट हीरकी
जोड़ी शृंगार दुहरो माला हार सब वरहके उत्सवके वधा नित्यके
रलीको हार वल्लभी जुहीको कस्तूरीकी माला वेषु हीरकी वेत्र
जडांऊ गेंद चौगान सोनेको वाघवकरी सोनेके चोवी नहीं धरे।
गोपीवल्लभमे भातकी धार छछि बलदार पकोड़ीकी कढ़ी पापड
मिरनको साक छोटे शाक मीगे शाक उत्सवको संध्या
पलनामे नित्यवत्

राजभोगमे आधो पाटिया मीगे शाक दही भात हांडी मलठा
दूधके गोपालवल्लभमे मनीहरके लडुवा
संध्या आरती पीछे लाल कुलह धरे पीतावर कजे होइ विना
झालरकी ओदनो ओढ़े

॥ कार्तिक सुद ९ ॥

अक्षय नौमीकुं अन्नकूटको शृंगार होइ पलनाके समय पलना
बीचमें राखे श्रीगङ्गुरजी पलनामें विराजे छोटे गङ्गुरजी श्रीमहा

प्रभुजीके पास विराजे पलना सुलायके परिक्रमा करे
राजभोगमें तुआरकी दार पकोजीकी बड़ी गोपालबल्लभमें बूरी
लेडुवा आरोगे।

॥ कार्तिक सुद १० ॥

दसमकं खल जरीके वस्त्र चीरा छज्जेदार वागा गोख जोजे सुनर-
राकी तुआर हलकी।

www.vallabhacharya-agrahar.org

॥ कार्तिक सुद ११ तथा १२ ॥
www.vallabhacharyakrupa.org

देव प्रबोधनी उत्थापन एकादशी तथा द्वादशीक दोऊ दिना मंगलभा-
गमें अंगोसरके नये ताई बूरी बलवा आरोगे शम्भामंदिरमें तहकि
छै। साढूकी सुपेती बिछाई नेकी नई ओढेकी सुपेती खोरसागरकी
सांझ सवेरकं शम्भ्या पै चादर नहो बिछोवें बालस्तके वस्त्र नहो गिर-
दाकी खोली नहो सांझकं चादर नहो सोढे नई सुपेतीके ऊपर पहले
दिना चादर नहो बिछोवें, कसना झावा पलगपोस चोरसा उत्सनेके
चंदुवा पिछवाइ मुदाके ढकना जरीके रजाई ओढे तापर लाल ज-
रीकी खोल ओढे बदन वार जरीकी काचकी पल्लवकी बंधे शीत-
कालको बंध पुरानो साढूकी २ सुपेती जबसुं शीत पडे तसुं नि-
छै प्रबोधनीके तीन सुपेती विछै आरती धारोकी होइ अभंग
श्री गुरजीकं होइ उवटना नहो, वस्त्र मुदाके शीत कालके तालमं-
टनकी सुथन कवाय गद्दड ओढेकी रजाई खल सादनकी दोकरामें
सुथन गद्दड कनाय छेदे बडे दोऊ चरहके श्रीमहाप्रभुजीकी रजाई
शम्भ्या मंदिरमें धर राखे जागते समय पुरानो गद्दड ओढे वा नयो
ओढे विराजकेकी गादी प्राणीन ताही पर साढूकी गूखी विछै खो-
ली नहो दोरसके दिन खोली चढे प्रबोधनीसुं माघ सुद ४ ताई
गादी पर गूखी विछै तह कुज एकादशी ताई रहे सिंहासन पर ज-
डाल तकिना लवी गादी जाटवोकी खोली घालवें की।

प्रबोधनीसुं रामनौमाकी दसमी ताई पापड विलवडी देवरी
तक कनरिया राजभोगमें नित्य आवे शयनमें गोपीवल्लभमें पापड
नित्य आवे देव सवेर उठे तो राजभोगमें वेगनके साढू भुजेन

शकरकंद को शाक भुजेना आरोगे गुड को क्येरी आरोगे सांभको
 रस सहेलो उत्थापनमें आरोगे सांभकुं देव उठे तो रायनमें वेगन
 को शाक आरोगे सांभकुं देव उठे तो द्वादसीके दिनसं राज भोगमें गु-
 डकी क्येरी आरोगे जोल ताई द्वादसीके दिनसं उत्थापनमें सांभको
 रस सहेलो जोल ताई आरोगे राज भोगमें नित्य गुडकी क्येरी आरोगे
 प्रबोधनीसुं जा एकादसीकुं रोटी आरोगे गोपीवल्लभमें तब रोटीकेसंग
 गुडकी क्येरी आरोगे

प्रबोधनीकुं वस्त्र फरुखे शाही जरीके श्रीमहाश्रमजीके तथा श्रीबकु-
 जीके बागा मुकुट वस्त्र रुई के श्याम, तेरससं रुईको बागा साटें सा-
 साके बागासं रुईके बागा पर जरीको बागा फुल गुर श्रीमस्तर परकु-
 लह जरीकी शृंगार कमल पत्र आभरण छेये बडे जन्माष्टमीवत् श्री-
 गुसाईजीके उत्सवकुं प्रबोधनीकुं जोहरे पहरे छेये उत्सवकुं गु-
 जरी पहरे हलके शृंगारमें वा भारीके शृंगारमें नित्य नूपुर पहरे
 प्रबोधनीसुं माघ सुद ४ ताई चोयी नहीं, अंजन नहीं, हमेल फौदना-
 की गादीकी नहीं, पोंदाग पै वाइकी हमेल इच्छा होइ तो धरे जो-
 डी हीराकी और आभरण जन्माष्टमीवत् चोयी शीत कालमें नहीं धरे,
 गोपीवल्लभमें आखो पाटिया मीवे शाक उत्सवको सधाना
 पलनामें बदाम मिश्रीकी डेली सेव.

राज भोगमें तीन कूज छडीयल दार मीगे शाक पापड तिलबडी देवरी
 कनरिधानकी आरी.

गोपालवल्लभमें लालाजीके अन्नकूटकी सामग्री मिल आरोगे उत्स-
 वके सधाना खीर दूनी वडाकी छछकी चपलेया हांडी नहीं दूधको
 क्येरी आरोगे शाक भुजेना सब तरहके आरोगे
 देव सवेरकुं उठे तो पलना झुलके मंडपमें पधार सांभकुं उठे
 तो ग्वाल होइ उवरा सर पीछे मिडपमें पधार

सवेरकुं देव उठे तो आगळे दिन अनोसर भये कोडी मांडे सांभकुं भोग
 उठे तो राज भोग आरती पीछे कोडी मांडे तिनारौमें

मंडपके पास छवडाये गोर शकरकंद सांवके दूध चना दूसरे ओते

प्रबोधिनीकुं देवोत्थापन होय के पंचामृत होय फिर गद्दु वागा
ओलके फिर तिलक होय

छबडासुं ठांर के धरे घृतके १६ दीवा बीच के द्वारमें तिवारीमें चौकमें
तिवारीसुं नीचे दोइ अंगीमें धरे तिवारीके कोनामें शीतकालको दोकराधरे

श्री गुरुजी मंडपमें चौकी पे विराजे श्रीबालकृष्णजी श्रीमदनमोहनजी

गादीसुं लगके विराजे पीछे के श्रीमहा प्रभुजी विराजे आलर बंरा

शंखनाद होइ देव उठे दरसन सुले कीर्तन होय चौको साहित श्री

गुरुजीकुं उगवे श्लोक ३ बार पढ़े उन्निष्टोत्तिष्ठ गाविन्द त्यजे

निद्रां जगत्पते त्वया चोत्थीयमानेन उल्लिखित भुवनत्रयम् ॥१॥ त्वयि

सुप्ते जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । उल्लिखितं चेष्टते सर्वमुन्निष्टोत्तिष्ठ

माधव ॥२॥ छोटे गुरुजीकुं स्नानके चक्रला पे कंकुको अष्टदल

मांडके पधराके तिलक करे अक्षत चोटे तुलसी वरणारविन्दमें पंचा

मृतमें शंखमें समर्पे कानके हाथ लगाय प्राणायाम करके कंकु अ

क्षत लेके संकल्प ॐ विष्णु विष्णु विष्णु रित्यादि दाक्षिणायने गरदतों

कार्तिक मासे शुक्लपक्षे अथ हरि प्रबोधिन्वेकादश्यां शुभकारे शुभनक्ष

त्रे शुभयोगे शुभकरो एव गुणविशेषण विशिष्टया शुभतिथौ श्री

भगवतः पुरुषोत्तमस्य देवोत्थापनाङ्ग भूतं पञ्चामृतस्नानमहं करि

ष्ये १ श्रीवामनजीवत् पंचामृतस्नान स्नान होइ चुके अंगरेअ

वागा जोडी पहरावे गोदके गुरुजीकुं पीतांबर उढावे श्रीगुरुजी

कुं तिलक अक्षत तुलसी समर्पे गोदके गुरुजीकुं माला पहरावे

श्रीगुरुजीकुं गद्दु उढावे श्रीमहा प्रभुजीकुं रजाई उढावे टेरा खेंचें

भोग आवें बूंदी जलेबौकी थार मिश्रीको पना सांठेको रस सिंगोडा

वफेणा के रताड़ू दूधकी हांडी मीये शाक फलारको सब आवे

शाक भुजेना रायवा कदली फलादिक उत्सवको सधाना सेंधो लेन

मिरच बुरा चालनी सब तरहकी भोग औषतुके तुलसी शंखदक धूप दीप होइ टेरा खेंचें मंडपके

पाससुं छबडा लेनो जलको कसेडा लेनो तिलककी तक्कड़ी शंख

धूप दीप चंदा ४ वातीकी आरती लेके तुलसीपूजनकुं वीकाइत

पुकारे नित्य आवे करके संकल्प ॐ विष्णु ३ रित्यादि पूर्ववत् एवं

गुण विशेषण विशेषण श्रुतिथौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य तुल-
स्या समर्पणं कर्तुं तदङ्गत्वेन तुलस्याधिवासनमहं करिष्ये। जलके
कसेंजसुं अरघ देइ ककु अक्षव छवज भोग धरे तुलसी रांखो
दक धूप दीप आरती होइ

तुलसीपूजन कर चुके समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र
वीज दोइ धरे दरसन खुले थारी की आरती सोने के दीपलाकी होइ
अमा करे साझ कु दे उठे होइ तो शयन भोग आवे सवेर कुं
होइ तो राज भोग आवे राक भुजेना थारमे अनसरखी के
जा आव खोरा जजाऊ

शुक्ल अथयजी दिनसुं शंखनाद होइ उत्थापन भोगमें चालनी
मतरह की

ध्या आरती पीछे शृंगार बजे नहीं होइ ग्वाल भोग होइ

शयन भोगमें छड़ीयलदार पापड ४ वज की छछ तिवारी में कैल
को मंडप बंधे झाड रोशनाई गिलास काच के धरे चौक में हांड़ी झाड

काच के बंधे शयन भोग सरे माला पहरे सव स्वरूप दर्शन खुले
शयन के जागरण के झांस परावज बाजे कीर्तन होइ पाट चौकाले

गे गेद चौगान धरे चौपड मड़ी रहै अनोसर को साज दुपहर के
अनोसरख वृ सिंहासन की शारी श्रीगुरुजी की श्रीबालकृष्णजी की

श्रीमहाप्रभुजी की शारी सन भरे कुंजा आवखोरा करे शयन के
वीज जजाऊ वंश में धरे शयन आरती होय शय्या को पेज लगे दर्श

न होय के करे समय होय तब जागरण के भोग आवे तब पाट चौकी
सरकावे भोग सरे पाट चौकी लगवें गेद चौगान बिधी धरे सिंखो-

ना की तब कड़ी रहै जागरण के प्रथम भोग आवे ताकी याद बूंदी
जले बीकी थार मलाई उत्सव को सधाना कदली पलादिक सांग लेन

मिरच बुरा चालनी सक वरह की प्रबोधिनी के जागरण के भोगमें धूप दीप
४ समय होय भोग सरे आचमन मुखवस्त्र वीज २ धरे माला पहरे

श्रीगुरुजी श्रीबालकृष्णजी पहरे दर्शन खुले आरती होइ पहली
समय होय शारी श्रीगुरुजी की भरे टेरा सेवे भोग दूसरे आवे

पहले भोगवत् समय होय भोग सरे आचमन मुखवरन बीज ४
 धरे माला पहरे दर्शन खुले दूसरी आरती होय समय होय झारो
 भरे तीसरे भोग आवे पहले भोगवत् समय होय भोग सरे बीज ८
 धरे माला पहरे दर्शन खुले आरती होइ सवा प्रहर रात्रि रहै टेरा
 खेचै श्री गिरिधरजीको उत्सव मंगल भोग आवे थार वंदो जलेबीकी
 मलवाई मारवन करा सधाना दधको उवरा दहीको उवरीया झारीश्री
 जमुना जलकी भरे शय्याको साज उठे श्री बाल कृष्णजीकी श्री महाप्रभु-
 जीकी झारी उठ शय्याप हात परे ते शय्या उठे नहीं शय्यामंदिर
 रमें सोहनी मंदिर वरन नहीं समय होय मंगल भोग सरे आचमन
 मुखवरन बीज २ धरे दर्शन खुले मंगल आरती धारीकी सोनके
 दीवलाकी होइ टेरा खेचै जागरन के समयकी माला श्री गुरजीभी
 बडी करे शृंगारकी माला पहरे टेरा खुले कीर्तन गावे गिरधरलाल
 बने रंग भीने आरसी बडी दिखावे टेरा खेचै गोपीवल्लभ भोग आवे
 आरवो पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना पूजीकी थार क्योरी
 ये नित्यवत् श्री बाल कृष्णजीकी श्री महाप्रभुजीकी माला बडी करे
 श्री महाप्रभुजीको अभ्यंग होय फूलल आवला उवटना चंदनसुन्ता
 अतर समर्पे आभरण गुंजा पहरे रजाई ओढे तापे केसरी जेरिआ
 की ओढनी उयवे राजभोग तयार होय तो उवरा आवे माल नहीं
 होय राजभोगमें डील होइ तो माल होइ पलना झुले बदाम मिश्री
 की डेली सेव उत्थापनमें राजभोगमें चालनी आवे सूकी मेवा बदाम
 मोरमिश्री दाख दुहारा गिरी आवे.

राजभोग आवे श्री महाप्रभुजी भोग मंदिरमें विराजे तहां तथा निज
 मंदिरमें विराजे तहां हरदीको मोक पूरे ताई विछे नहीं श्री महाप्रभु
 जीको निजमंदिरमें श्री महाप्रभुजीको मुख रजाई सुं वा सुपेती सुं ओढे
 रहे प्रबोधनी सुं माघ सुद ४ ताई वसंत पंचमी सुं जे ल ताई उपरना
 सुं श्रीमुख ओढे रहें श्री गिरिधरजीके उत्सवके दिन श्रीगुसांईजी
 के उत्सवके दिन श्रीमुख खुल्यो रहै श्री महाप्रभुजीको
 पलंगजीके नीचे

राजभोगमें छड़ियलहार तीन कूड़ा कचरीयानकी थारी पापडतिल
वजी देवरी मिरच फल वजीके शाक २ पांचो भात भीगे शाक.

अन सरखीमें गोपाल कलु भमें जलेबी उत्सवको सधाना खीर दूनी
शिखरन वजी पलनाको भोग कडाकी छछकी चपरीया रायता शाक
भुजेना सब तरहके

हांडी मलज दूधके पेडा दूधकी बसोदी शेवत करपी बसोदीके
दरी मलाई सड़े मोठे दही देवेको दही कदली फलादिक चालनी
सब तरहकी मिरच वरा लेन

श्रीमहा प्रभुजीके भोग सरखी आवे भातको थार छड़ीयलहार मुग
तीन कूड़ा पापड कचरीया तिलवजी देवरी मिरच फल वजीके शाक भु-
जेना रायता सरखीके अन सरखीके सब पांचो भात रोये-लीये नहीं.
दूध घरको साज सब दूधको मलज मारनाने श्री मलाई मगकी हांडी
मेवा उमिठाईकी आर गुडकी कयेरी कदली फलादिक लेन मिरच
वरा नीव आदा पाचरी उत्सवको सधाना

अन सरखीमें बंदी जलेबीको टोकरा शिखरन वजी खीर भीगे शाक
मैदाकी पूरी चरीको मुरब्बा नारंगीको पना कडाकी छछकी हांडी
समय होय भोग सरे श्रीमहा प्रभुजीके आचमन मुखवस्त्र बीज ४
पलंगडीके खुट्टे अगाडीकुं दो दो श्रीगुरुजीकुं आचमन मुखवस्त्र
बीज आरोगे माला पहरे ^{सब साज सजे} बीज वाम ओर उत्सवके तर्कियाके पास
धरे दर्शन खुले आरसी देखे श्रीगुरुजीकुं तिलक होइ अक्षतने-
टे बीज दोइ धरे तिलकके पाट चौकी लगावे गंद चौगान सोनेके
धरे बिछी धरे मुठिया वारके चुनके हीलकी श्रीगुरुजीकुं आरती
उतारे दीपना वने श्रीमहा प्रभुजीकुं तिलक करे अक्षत चौटे बीज
तिलकके ४ धरे मुठिया वारके आरती उतारे नौखर पटका रूपे
या होइ आरतीकी थारी नही श्रीगुरुजीके होइ मोई होइ
नौखर श्रीगुरुजीकुं होय आरसी देखे माला बडी होइ श्रीमहा प्र-
भुजीकी माला रहे उत्थापन समय बडी होइ.

संध्या आरती पीछे शृंगार बडो होय कुलह रहे कुलह पर

हरयो ताइत श्रीकंठमें चौकी रायेनमें छडीयलदार कजकी छछ.

उत्सव भेलो होइतो प्रबो धनीके दिना गोपीवल्लभ भोग आवे पीछे श्रीमहा प्रभुजी कूं अभ्यंग होइ केशरी जोरि आकी ओदनी ओदें आभरण पहें राज भोगमें श्रीमहा प्रभुजी कूं भोग आवें सरखडी अनसरखडी दूधघरकी पांचो भात आरोगें श्रीगुरुजीके पांचो भात गोपीवल्लभमें राज भोगमें प्रबो धनीके उत्सवको नेग आरोगें दूसरे दिना श्रीगिरिधरजीके उत्सवको नेग सरखडी अनसरखडी दूधकी हाडी मलजा उत्सवको सधाना पांचो भात दूधघरकी सामग्री श्रीमहा प्रभुजीको भोग नहीं श्रीमहा प्रभुजी कूं अभ्यंग नहीं श्रीगुरुजीको शृंगार रह्यो आवे उत्सव न्यारो होय तो तेरसकेदिना छडीयलदार डुवकीकी बढी आरोगें शृंगार वस्त्र उत्सवके लाल छज्जेदार चीरा ता पै हीराको सेहरा हीराकी जोडी शृंगार दुहरो उत्सवको देव उठे पीछे.

॥ कार्तिक सुद १३ ॥

पहली तेरसकूं वेंगन आरोगें और तेरसकूं वेंगन नहीं आरोगें वेंगन देव उठे तवसुं अषाढ सुद १० ताई आरोगें देव रायनी एकोदशीसुंद.

॥ कार्तिक सुद १४ ॥

के दिन श्री गोविंदजी महाराज को उत्सव ता दिन श्रीविठ्ठलरायजीके उत्सववत् आरोगें सरखडीमें अनसरखडीमें दूधघरमें वस्त्र पीरी श्रीमखाणके माणिककी जोडी कुलह जोड कामको शृंगार डूक हरो.

॥ कार्तिक सुद १५ ॥

के दिन श्वेत जरीके वस्त्र श्रीमस्तकपै हीराको मुकुट विना पंखाको फुलगर ओदें गंदे स्वरूप मोजा पहें वागा पहें शीत नहीं होय तो प्रबो धनी कूं फुलगर नहीं ओदें होय तो पंखा सहित मुकुट धरे ओदनी ओदें गंदे स्वरूप कंठवरन धरे काछनी धरे.

॥ मग सरवद १ ॥

मग सरवद १ सुं माघ सुद ७ ताई गोपालवल्लभ नित्य आरोगें आज सुं धनु मीस गिणें ता दिन सुं माघ एक ताई गोपालवल्लभमें जो

सामग्री अरोगें सो सामग्री आखे दिनके नेगमें दूसरे दिन मंगल भोगमें शृंगार भोगमें अरोगें.

शृंगार वरन लाल कारचोवके हरी जोड़ी श्रीमस्तक पर वेषा दीतवार मंगलवार न होइ तो गोपी वल्लभमें चोरवा मूगकी खीचडी उरवाक चारिया आरोगें उरवा न होय तो कढी आरोगें श्रीदामोदरजी महाराजकी आज्ञासु.

आज गोपाल वल्लभमें मनोहरके लडवा आरोगें दारमें खिचडीमें कोल्हाके शाकमें वेगनके शाकमें आदा पडे डोल तांडे एकमसुं शीत कालकी सामग्री सरखडीकी क्रमसुं नित्य आरोगें दीतवारकूं मंगल वारकूं एकादशीकूं द्वादशीकूं मावसकूं उत्सवकूं पुनमकूं खिचडी नहीं आरोगें.

वेगन भात लोंग भात वडी भात दीतवारकूं मंगलवारकूं पुनमकूं आरोगें उत्सवकूं द्वादशीकूं नहीं उडदकी दार लोंगकी लीये २ प्रकारकी आदाकी लीये २ प्रकारकी गुडकी लीये दीतवार मंगलवार मावसकूं आरोगें उत्सवकूं नहीं शीत कालमें मगसर वद १ सुमा घसुदी १४ तांडे खिचडी अरोगें फिरती चार विरियां आखे मूग चार विरियां चनाकी दारकी खिचडी आरोगें चार विरियां मूगकी छडि यल दारकी खिचडी आरोगें चार विरियां तुअरकी दारकी चार विरियां वेगन भात मिरचकी कढी चार विरियां लोंग भात मिरचकी कढी मगसर सुदी १५ कूं लोंग भात पानकी कढी आरोगें लोंग भात २ विरियां आखे लोंगके २ विरियां बुकनीको ४ विरियां कडी भात वडीकी कढी नये चना आये तौ ४ विरियां चणा भात मिरचकी कढी आरोगें.

Sansthan

गोपी वल्लभमें खिचडी होइ वा लोंग भात वा वडी भात वा चना भात वा वेगन भात होइ तब भात श्वेत दार नहीं राज भोगमें दार आरोगें पापड कचरिया नकी थारी गोपी वल्लभमें राज भोगमें नित्य एक कचरी या तिलवडी रामनौमीकी दसमी तांडे आरोगें प्रबोधिनीसु गोपी वल्लभमें भात दार आरोगें ता दिन कचरियाकी थारी नहीं राज भोगमें

कचरिया तिलवडी देवरी नित्यवत्

उत्सवके दिन राजभोगमें कचरीयाकी थारी लीची आदामी २ विरियां
दूककी २ विरियां आताके रसकी राजभोगमें आवें उडकी दारकी अथकी
मे १ डवारिया राजभोगमें आवें गोपीवल्लभको नेग उडकी दारको गो-
पीवल्लभमें आवें भातकी थार लीची लोंगकी २ विरियां एक विरियां
आखे लोंगको एक विरियां बुकनीको उडकी दार गुडकी लीची एक
विरिया २ वा दाइ विरियां उडकी दार

मगसर वद १ कुं मनोहरके लडुका

॥ मगसर वद २ ॥

कुं तिल साकली

॥ मगसर वद ३ ॥

कुं

॥ मगसर वद ४ ॥

के दिन श्रीदामोदरजी महाराज सात स्वरूप पधराये सो उत्सव
वस्त्र लाल जरीके श्रीमस्तकपर दुमाळा धरें हीराकी जेडी शृंगार दु-
हरो वेणु हीराको वेम जडाऊ पिछवाई काचकी ताकैयानके कलाब-
तुकी पवी वध पाटचीकी की खालीकी मखापकी गेद चोगान सोनेके
बाघ बकरी सोनेके मंडे पल्लुवकी वंदन वार

गोपीवल्लभमें आखे पाटिया मौये शाक उत्सवको सधाना पलनामें
बदाम मिश्रीकी डेली सेव उथापनमें चालनी बदाम मिश्री की डेली सेव
राजभोगमें छडी बल दार तीन कुंछा कचरिया नकी थारी मौये शाक
अन सरवडीमें हांडी मलडा दूधके गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुका
वासोदी उत्सवको सधाना खीर दूनी वजकी छाछकी चपटैया

॥ मगसर वद ५ ॥

के दिन पूणी गोपालवल्लभसु ६ कुं बुदीके लडुका शरर बंदको
गुडको मौये शाक तुआरकी दार श्वेत भोत होइ श्री गिरिधारीजी
के छोटे भाई श्री गोकुलनाथजीको उत्सव तासु सप्तमीकुं उपरेव
अष्टमीकुं लावनसाई तोषीकुं दूरके तोषीकुं शनि कुं सकर गारा

मगसिरवरी - श्रीगुसाईजीके द्वितीय पुत्र श्रीगोविंदरायजीके
उत्सव - गोपीबल्लभमें पाटीया आखे सेव सेर २ खांड सेर
सुगंधी पाठोला और सब नित प्रमाणे

राज भोगमें मगसिरवरी - के उत्सवमें सरखरीमें
छठवाल दार तीन बड़ा भाण्ड क्वारीया स्याक सेव सेर
७॥ पाटीयाकी खांड सेर १॥ सुगंधी पाठोला ७॥ और सब
कीकी सामग्री बारा की लिखी है सो बारा न होय तोख दूसरी
राज भोगमें चौरवा सेर ७॥ मेवा भातके मेवा सेर ७॥ संत
सेर ३ छेगुनी लेखे सुगंधी पावली भर.

ग्वाल भोगमें मगसिरवरी - के उत्सवमें श्रीगुसाईजीके द्वि-
तीय पुत्र श्रीगोविंदरायजीके उत्सव.

बारा बूदी जलेबीको देसन सेर २ ची सेर १॥ खांड सेर २
छोटी बूदीको.

मेदा सेर २ जलेबीको ची सेर २ खांड सेर ४

गोपालबल्लभमें ऊपरके बरामेसुं बूदी जलेबी कोबार आगे
मेदा पुरीकी सामग्री मेदा सेर ५॥ ची ७॥

सिरखरन बड़ी चोरी ग ५— मेदा ५— खांड रतल २ ची—
दही रतल १

अछ बड़ाकी हांडी ताकी दाल ७॥— सेनमें याहीमेसुं ५—
मीये स्याक ताकी खांड ७—

न. दूध घरकी सामग्री मगसिरवरी - श्रीगुसाईजीके द्वितीय पुत्र
श्रीगोविंदरायजीके उत्सवको.

१ भुंजे मेवा बालनीको तोख तीन तीन प्रमाणे.

२ जेखकी हांडी बाल भोगमें परावकी

३ पेठा सुपेवको दूध रतल ४ के खांड तोला ३ सुगंध तोला अर्ध

४ बरफीकेसरी दूध रतल ५ खांड तोला ४ केसर तोला अर्ध
सुगंध तोला अर्ध

५ दध हांडीको रतल ३ बड़ा तोले २ सुगंध पाठोला.

- ६ मरुतको दूध रतल ४॥ खांड तोला १८ सुगंध ५॥ केसर ६॥
 ७ गुलाभ कतलीकी खांड सेर अर्ध फूल गुलाभी १०
 ८ बिलसाईकी खांड सेर ५ र्ध ५॥ केसर बाल ५ पेंग भावे ख-
 बुजा भावे देला.
 ९ मौमे दही रतल ६॥ खांड रतल १
 १० छे व्गे दही रतल ॥ अर्ध जीरो लोण.
 ११ साग घर्मे सुतर मेवाकी छाव उ सव भागकी उत्थान प्रमाणे

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

अरभीकूं लारनसाही नोभीकूं कुरके गुंडा दसभीकूं राकरपारा
२ कूं श्रीमहाप्रभुजीके आभरण गुंजेके तथा चतनखोष

॥ मगसर वद ८ ॥

कूं श्रीगोविंदरायजीको उत्सव ता दिन हरे श्याम वरन नहीं सादन
के वा कीमखांपके पीरे वा लाल कुलह जंडाऊ जोड कामको गोक्षी
खुलजे धरे गोपीवल्लभमें तुरकी दार राजभोगमें हांडी मल्लु दूधके

॥ मगसर वद ९ वा १० ॥

नोभीकूं वा दसभीकूं मंगल भोग रोटीको हेडि खीरको डकरा मंग
की कडीको शाक तेलके बेगनको शाक भुजेना कयेरी लोनकी नीकुडी
आदा पाचरीकी मारनकी वूराकी घृतकी गुडकी नित्यकी कयेरी
मलाईकी मारनकी वूराकी सधानाकी दहीकी डकरिया दूधको डकरा
(राजभोगमें उडकी रोटी तामें तिल डारे कयेरी लोनकी मारन
की वूराकी घृतकी गुडकी)

एकादशी कूं (मगसर वद ११)

मगद वेसनको

द्वादशी कूं (मगसर वद १२)

शृंगार वेजनी सादनके वरन लाल जरीकी फतवी श्रीमस्वकपे
छज्जेदार बीरा लूमकी कलंगी हीराकी पहुंची श्रीकंटमें कंबी दुगदुगी
वाजु नहीं शृंगार हलको मंगल भोगमें गोपीवल्लभमें तथा पूरी घृत
वूराकी कयेरी आवें शृंगार भोगमें आखो दिनमें मब्डी आखीगे
द्वादसीको नेम नहीं

॥ मगसर वद १३ ॥

के दिन गोपीवल्लभमें कडा आरोगें पूजेकी वेई कयेरी लोनकी नी
वूकी आदा पाचरीकी मारनकी वूराकी घृतकी गुडकी सरडीमें भात वू
अरकी दार राजभोगमें हांडी मल्लु दूधके गोपालवल्लभमें श्रवणके
॥ मनोहरके लडुवा आज श्रीधनश्यामजीको उत्सव लाल सादनके

हरी जोड़ी पंजाकी कुलह जोड कामको शृंगार भारी.

॥ मगसर वद १४ कुं ॥

॥ मगसर वद ३० ॥

॥ मगसर सुद १ ॥

॥ मगसर सुद २ ॥

॥ मगसर सुद ३ ॥

॥ मगसर सुद ४ ॥

॥ मगसर सुद ५ ॥

॥ मगसर सुद ६ ॥

॥ मगसर सुद ७ ॥

॥ मगसर सुद ८ ॥

कुं बडे श्री गोकुलनाथजीको उत्सव वधाई बैठे श्री गोकुलनाथजीके उत्सवकी. अष्टमीकुं सात स्वरूपकी नौमीकुं श्रीगुसांईजीके उत्सवकी आज श्री गोकुलनाथजीको उत्सव. प्राचीन जडाऊ कुलह रेसमी लाल छपाके वस्त्र लाल जोड़ी एक रंगे शृंगार दुहरो गोपी वल्लभमें तू अरसी दार भात आरोगे. राज भोगमें शकर कंदको गुडको मीये शाक आरोगे. हांडी मलजा दूधके गोपाल वल्लभमें धांसके लड्डुवा आरोगे शतरंज सोनेकी बेन जुडाऊ गेंद चोगान सोनेके जहां श्री गोकुलनाथजीके पादुकाजी विराजते होइ तो श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् सखरीमें अनसखरीमें दूध धरकी सामग्री श्रीमहाप्रभुनकुं अभ्यंग होइ.

॥ मगसर सुद ९ ॥

श्री गोवर्धनजी महाराज सात स्वरूप पधारणे सो उत्सव. वस्त्र लाल कौम खांपके जोड़ी कुलह हौराकी जोड कामको शृंगार दुहरो पिछवाई कौम खांपकी पाट चौकीकी खोली कौम खांपकी वेणु हौराकी वेन जुडाऊ गेंद चोगान सोनेके चोपड जुडाऊ गोपी वल्लभमें भातकी थार छडी यल दार पकोड़ीकी कवी मीये शाक

गोपालवल्लभमें दही धरा वासोंदी हंडी मलज दूधके वडाको छछको
उवरा आधो पाटिया मौगे झाक.

॥ मगसर सुद ९ ॥

के दिन श्रीगुसांईजीके उत्सवकी बधाई बैठे.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

॥ मगसर सुद १० ॥

के दिन शकर पारा.

www.vallabhacharya-agrahara.org

www.vallabhacharyakrupa.org

॥ मगसर सुद ११ ॥

(Pushtimargiya Research Portal)

॥ मगसर सुद १२ ॥

के दिन शृंगार वस्त्र हरी साटनके कसुमल गोल पाग लाल दार
वाईके बंद पहुंची कंठी दुगदुगी होराकी वाजू नहीं पहुंची छेदी
धरे फतवीके शृंगारमें वंदके शृंगारमें मंगल भोगमें गोपीवल्लभमें
गोपालवल्लभमें खीर वडा दूराकी कयेरी आरोगे. नित्यकी कयेरी
हू आरोगे. आखे दिनमें मठजी शृंगार हलको दादस कुं नेम न
हीं. जब सावकाश होइ तब आरोगे. दूसरे दिन नीचें लिख्यो है.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

॥ मगसर सुद १३ ॥

के दिन गोपीवल्लभमें पूरीके ठिकाने भरमां पूजी चूककी पूजी आ
दाकी कच्चर अरोगे लोचकी कयेरी बडी और कयेरी नित्यकी.
मगसर सुदीमें मंगल भोग वेगन भातको घृतको कयेरी कचरीयाकी
आरी पापड मिरचकी कबी मिरचको साक साक छोके ४ भुजेना २
सामग्रीकी आर नित्यकी कयेरी. दहीकी उवरीया दूधको उवरा स
खडीमें कयेरी लोचकी नीबुकी आदा पाचरीकी.

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ मगसर सुद १४ ॥

Mota Mandir

के दिन श्री गिरिधारीजी महाराज श्री नाथजीके यहां छप्पनभोग
शुरू कीयो सो उत्सव - श्रीनवनीत त्रिशाजीको शृंगार लाल जरीके

रुख श्रीमस्तकपै लाल जरीको टिपारा जोड कामको मोक्षी श्वेत ज-
रीके हीराकी जोडी शृंगार भारी उत्सवके कलीके जुहीके वल्लभी चंद्र
हार शृंगार दुहरो वा ब्रह्महरो गेंद चोंगाव सोनेके चौपड जडाऊ पि-
छवाई पाट नोकीकी खोली लिसेमाकी मरवापकी मंगल भोगसु चंद्र
कला आरोगे गोपाल वल्लभमें आखे दिनमें

गोपी वल्लभमें लोंग भात पानकी कबी कचरियाकी आरो मीचे शाक
राज भोगमें छडी पल हार मीचे शाक आधा पाटिया हाडी मलज दुधके

॥ पौष वद १ ॥
(Pushimargiya Research Portal)

के दिन गोपाल वल्लभमें बदामको सौरा बरषी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद २ ॥

के दिन गोपाल वल्लभमें बदामको सौरा बरषी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद ३ ॥

बदामको सौरा बरषी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद ४ ॥

के दिन गोपाल वल्लभमें बदामको सौरा बरषी पलनामें आरोगे
आखे पौषमें

॥ पौष वद ५ ॥

के दिन बदामको सौरा बरषी पलनामें गोपी वल्लभमें आरोगे

॥ पौष वद ६ ॥

के दिन गोपाल वल्लभमें बदामको सौरा बरषी पलनामें आरोगे

॥ पौष वद ७ ॥

के दिन श्रीकल्याणरायजी श्रीगंगाईजीके नातीको उत्सव वल्लभ
हरे उग्राम नहीं जोडी खुलती कुलह पसीकी वा जडाऊ जोड कामको

॥ पौष वद ८ ॥

के दिन लाल साठनके वस्त्र कसूमल पाग छज्जेदार वा गोल जोड़ी
सोनकी शृंगार हलको गोपाल वल्लभमें बदामके सीरा बरसी पलनामें

॥ पौष वद ९ ॥

बिना किनारीके

श्री गुसाईजीको उत्सव - वस्त्र पीरी साठनके उत्तके कुलह जुम्माष्ट
मीकी शृंगार दुहरी जोड़ी प्राचीन लाल हमेल प्राचीन फांदनापे गा
दीपे शृंगार जुम्माष्टमी वत् कमल पत्र होइ चसनी सोनेकी मोतीकी
धरे मोतीकी कमल अजम नही शृंगार जुम्माष्टमीको दिवारीको
श्रीगुसाईजीके उत्सवकी एक सस्के होय वस्त्रको पैर अरोगेको
क्रम श्रीगिरिधरजीके उत्सववत् पांचो भात श्रीगुरुजीकुं श्री
महाप्रभुजीकुं उवरना सहित अभ्यंग होइ आभरण गुजा धरे
केसरी जेरि आकी ओढनी ओढे. राज भोगमें न्यारो भोग. श्रीमहा
प्रभुजीकुं आवे. श्रीमुख खुल्यो रहे तिलकको क्रमहु श्रीगिरिधर
जीके उत्सववत् कुलह रही आवे श्रीगुसाईजीके उत्सवकुं पीरी
साठनकी रजाई सब टिकानेके सुधन कवाय गद्दउ छोटे बड़े
दोऊ तरहे सांझकुं कुलहयै ताइते हथो चौकी श्रीकंठमें

॥ पौष वद १० ॥

के दिन शृंगार उत्सवको फांदनाकी गारीकी हमेल प्राचीन नहीं
धरे फांदनापे ताइतकी हमेल डच्छ होइ तो धरे. छडियलदार
डूवकीकी कबी गोपाल वल्लभमें बंदीके लडुवा आरोगे. सांझकुं
कुलह वडी होइ टोप धरे श्रीकंठमें चौकी रहे.

॥ पौष वद ११ ॥

कुं श्री गोविंदजी महाराजको उत्सव. श्वेत कीमखापके वस्त्र जोड़ी
कुलह पांनकी जोड़ कामको आरोगेको क्रम श्रीविठ्ठल रायजीके उत्स
ववत्

॥ पौष वद १२ ॥

कुं गोपाल वल्लभ.

॥ पौष वद १३ ॥

कुं गोपाल वल्लभ

॥ पौष वद १४ ॥

के गोपालवल्लभ.

॥ पौष वद २० ॥

के गोपालवल्लभ.

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

www.vallabhacharya-agrahara.org

www.vallabhacharyakrupa.org

(Pushchimargiya Research Portal)

श्री गुरुमंडी जीने उत्सव पौष और मावस पहले खर मंडा आरोग्यके विचार होय जा दिन ताके आगले दिन संध्या भोगकी थार १ नित्यकी १ खर मंडाकी उत्सवके संधाना दूसरे दिन मंगल भोगमें गोपीवल्लभमें गोपालवल्लभमें खर मंडा मुगोजकी छाछ उत्सवको संधाना आरोग्य वस्त्र हरी कीमखांपके हीराको टिकारो शृंगार भारीजोड़ी हीराकी श्रीकंठमें बही धरें चंद्रिका कतरा सादा राजभोगमें अरोग्य. तेलकी खरखरी तामें अजमां लोन पडे दूसरे दिन गोपीवल्लभमें पुरीके टिकाने कचौरी छोक्यो दही लोनकी कचौरी आरोग्य नित्यकी कचौरी सब आवें गोपालवल्लभमें राखोजन रमा घृतकी कचौरी

॥ पौष सुद १ ॥

के गोपालवल्लभ.

॥ पौष सुद २ ॥

॥ पौष सुद ३ ॥

॥ पौष सुद ४ ॥

॥ पौष सुद ५ ॥

॥ पौष सुद ६ ॥

॥ पौष सुद ७ ॥

॥ पौष सुद ८ ॥

॥ पौष सुद ९ ॥

॥ पौष सुद १० ॥

श्रीरा सुपेद जरीके वस्त्रभी -
सुपेद जरीके कतरा सपेद लपरी -
बादलाकी हीराकी जोड़ी हलके
शृंगार प्रलका धरे

की तिन
प्रलका बिभुरी सो दे
आधो मुख नीलाम्बर हो हाँकी

श्रीमट को पाट नगी सपेदको

। भोजीके दिन ।

बला लाल धीरे के हीराकी जोड़ी बही,
कंठ में हीरा की बही कर्ण फूल
सादा चंद्रिका मधवको शृंगार श्रीरा
छत्रेदार

Sansthan
Shrimad Gokulnathji Maharaj
Mota Mandir

॥ पौष सुद ११ ॥

॥ पौष सुद १२ ॥

॥ पौष सुद १३ ॥

॥ पौष सुद १४ ॥

Core Mota Mandir - Pracheen Kram 2

॥ पौष सुद १५ ॥

पौष सुदी में जा दिन माडा अरो गाइवको विचार होइ ताके आगले दिन रायन भोगमें माडा उत्सवको सधाना आरोगे दूसरे दिन मंगल भोगमें गोपी वल्लभमें गोपाल वल्लभमें माडा चुकली कांती वडा उत्सवको सधाना आरोगे शृंगार वस्त्र वेंजनी श्रीमखापके हीराकी जोडी श्रीमस्तक पर हीराको फगा चंद्रका सादा शृंगार भारी श्रीकंठमें कही संक्रांतिके पहले दिन भोगीको उत्सव अभ्यंग होइ लाल छोटकी कवाय पहरे छोटकी चौरा छप्पेदार बांधे चंद्रका सादा हीराकी जोडी कर्ण फूल ४ श्रीहस्तमें रत्नचौक मध्यके पोदना शृंगार मध्य तांडी

गोपी वल्लभमें भातकी थार छडी पल्लव पकोडीकी कदी मौये शाक पूरीके टिकाने नीला आरोगे नीलाके संग क्योरी लेनकी माखनकी वूराकी घृतकी गुडकी नीबूकी आदा पाचरीकी नित्यकी कटोरी आवे

राज भोगमें आधो पाटिया मौये साक वडाकी छछको डवरा गोपाल वल्लभमें बूंदी के लडुवा आरोगे

॥ संक्रांति ॥

२ कर्ण फूल श्री प्रोग मे पटकी १ लवण १ माळा १ मोती कीरी

संक्रांतिके शृंगार वस्त्र लाल छोटकी जोडी ~~हीरा~~ हीराकी छोटकी चौरा गोल ~~लवण~~ लवणकी कलंगी शृंगार हलको गोपी वल्लभमें खीचडी कनरियाकी थारी वेडीकी कदी

राज भोगमें आधो पाटिया गोपाल वल्लभमें पुवाकी थार घृत वूराकी क्योरी संक्रांति सेवेरक होय तो राज भोगमें दूसरा

रोगे सांझ कूं संचांति होइ तो दूसरे दिन वृमर राज भोगमें आरोगे.
सांझ कूं उत्थापनमें वा संध्या भोगमें वा शयनमें सेवेर कूं मंगल भोग-
में वा गोपीवल्लभमें वा राज भोगमें तिल वा आरोगे. चांदनी सब
तरह की मीठे शाक तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ.

एक दिन राज भोगमें नीला आरोगे. क्योरी लोन की माखन की बुरा की
घृत की गुड की गोपालवल्लभमें लैलई वा बुरा की क्योरी आरोगे. माघ-
वदीमें गोपालवल्लभमें गुड की सामग्री आरोगे. कोई दिन गोपीवल्ल-
भमें पूरी के टिकने रताल की गुड़िया भरता की गुड़िया चना की
गुड़िया आदा की गुड़िया एक वर आरोगे. सूरण की नहीं.)

॥ माघ वदी ८ ॥

कूं शृंगार वस्त्र लाल की मखांपके हीरा कुलह जोड़ काम को हीरा-
की जोड़ी शृंगार भारी वडे श्री दाऊजी महाराज को उत्सव. अरौ
गवे को क्रम श्री विठ्ठलरायजी के उत्सव वत्. राज भोगमें दिखरन की
को डवरा आरोगे. एक दिन गोपीवल्लभमें वा राज भोगमें सिनडी

॥ माघ वदी ३० ॥

कूं जरी के वस्त्र धरे जोड़ी खुलती शृंगार भारी होइ कुंडल के मेल-
में कुंडल धरे. कर्ण फूल के मेलमें ४ कर्ण फूल धरे.

॥ माघ सुद २ वा ३ ॥

कूं गोपीवल्लभमें टोकला आरोगे. क्योरी माखन की बुरा की लोन की
घृत की गुड की मैदा की पूरी खरखरीह आरोगे. नित्य की क्योरी
हु आवें. राज भोगमें गोपालवल्लभमें बुरा की और माधुली को दाख
पधरावें. उडद की वेधमी आरोगे. ताके संग क्योरी लोन की, मा-
खन की बुरा की घृत की गुड की आरोगे.

॥ माघ सुद ४ ॥

कूं शृंगार वस्त्र लाल जरी के श्रीमस्तक पै किरीट हीरा को धरे जो-
ड़ी हीरा की शृंगार दुहरो उत्सव की हरी माला लाल माला श्वेत माला

वल्हू भी हार कलीको हार जुहीको हार चंद्रहार शृंगार भारी मंगल भोगमें
गोपी वल्हू भमें गोपाल वल्हू भमें बुड कल घृत वृषकी कवेरी आरोगें आखे
दिनमें मण्डो आरोगें.

॥ माघ सुदी ५ ॥

वसंत पंचमीके उत्सव मंगल भोगसं आखे दिनमें सेवके लड्डुवाको
वडो बाल भोग आरोगें श्री गुरुजीकी गादी वसंतकी तापै चौपड ता
उपरना विछे श्री महा प्रभजी भीतर रजाई ओढ़े वा सुपेती ओढ़े
ऊपर सेस तापै उपरना दोइ रंगीन वस्त्र होइ ता दिना उपरना नपै
ओढ़नी ओढ़े. सिंहासन पिछवाइ चढ़वा मुढाके ढकना श्वेत मुढाके
चुनवैके वस्त्र साडी श्वेत भातिवार सुनहरी किनारीकी नौली लाल
लहंगा वेंजनी वा हज्यो श्वेत सूथन पाग वाया तनियां पुटका अतर
चो वा मिलमां लगायके धरें मुढाके वस्त्र जरीके रेशमी निकासने
श्वेत वसंतौ धरने नये वस्त्र धरने दिवारीको जन्माष्टमीको हिंडोरा
को पहले वर्षको साज राखने. हरी सादनकी रजाई ये सब दिना
नेकी नई मुढाके सूथन कवाय गद्द बडे छोटे दोऊ ओरके दूसरे
उत्सवके साडी लहंगा तीजकी हरीकी गंगुलीके दग हराकी राखने
ऋतु अनुसार मुढाके वस्त्र पलटें सब नये जोड वर्ष दिन ताई रहें
वसंतकू अभ्यंग होय वस्त्र श्वेत चुनके उन्नुके फूलगर श्री महाप्रभ
जीकी रजाई हरी सादनकी उन्नुकी तापै उपरना तीन तापै ओढ़नी
श्री गुरुजीकू वागा उन्नुको बाहरकी सिडकीकी पाग चंद्रिका सादा
धरें जोडी हरे लाल मोनाकी कर्ण फूल ४ लाल सौस फूल सरपेन
लाल हत सांकडा धरें मुद्रिका नहीं श्रीकंठमें ४० दिन ताई हांस
नहीं फोंदना बडे धरें फोंदनापै माला मोतीकी सोनेकी मिलमां
धरें गादी पै शृंगार मध्यु ताई आजसुं होरी ताई रायनके दर्शन
खुलें. गोपी वल्हू भमें आखो पाटिया मीमे शाक उत्सवको सधाना.
राज भोगमें मीमे शाक छडियलदार तीन कुंडा कनरियानकी थारी
वडीके शाक २ गोपाल वल्हू भमें मनोहरके लड्डुवा खीर दूनी बडाकी

छाछकी चपदीया उत्सवको सधाना हांडी नहीं दूधको कवैरा नित्यको
 फेर राजभोग आवें कलश तिवारीमें बीचमें धरने पीरो वस्त्र उवावने
 कलश साजने खजूरके फणगा तामें वेर फूल लगावें मौर धरें
 सरसोंकी डारी जवकी डारी धरें राजभोग सरें श्रीगुरजी सिंहा-
 सनपै विराजे सिंहासनपै आवेंके मौर धरें माला सब स्वस्वपहर
 गादी पर श्वेत पट्टी धरें आभरणके ऊपर नित्य वगौंचा कुं नहीं धरें
 कुंजसुं डोल ताई पट्टी धरें उपरनाकी फूलगरपै लाल पीतावर ४०
 दिन ताई ओढ़े कुंजक हारीक डोलके पीतावर ओढ़े शृंगारकी
 माला मुठा पर रहै सिंहासनपै गादीके पास अगाडीक थागकी
 माला २ धरें विना थागकी माला दोइ दोइ माला २ छडी २ गेंद २
 खंड पै दोऊ ओर धरें अधिवासनको साज तिवारीमें चौकी पैधरें
 गुलाल चंदन अवीर चौवा शंख तुलसी कंकु अक्षत गड्डीकी कवैरी
 संकल्पको लोग श्रीजमुनाजलकी झारी एक भरके निजमंदिरमें
 गोखलामें धर राखें सिंहासनके पास बाई ओरक पडगीपै खेलके
 भोगकी सब कवैरी धरें एक दूधघरकी सामग्रीकी एक बालभोग-
 की सामग्रीकी कवैरी २ कदली फलदिककी एक मेसाकी एक मि-
 गईकी केला होइ वा नारंगी होय तो बुराकी कवैरी पास धरें
 काकडी होय तो लेन मिरचकी धरें वेर होय तो मिरचकी धरें ४०
 दिन ताई खेलकी कवैरी भोग आवें डोलकुं नहीं

अधिवासन होइ आचमन प्राणायाम संकल्प करें विष्णुविष्णु ३
 रित्यादि उत्तरायने माघमासे शुक्ल पक्षे अथ वसंतपंचम्यां शुभ-
 कारे शुभनक्षत्रे शुभयोगे शुभकरणे एवं गुण विशेषण विशिष्टयां
 शुभतिथौ भगवतः पुरुषोत्तमस्य वसंतोत्सवं कर्तुं तदङ्गत्वेन
 कलशाधिवासनमहं करिष्ये कंकु अक्षत खेलके साज पर क-
 लशपर किंचित् जोरे गटीकी कवैरी भोग धरें तुलसी शंखोदक
 धूप दीप चार वाती की आरती करें खेलको साज उवावें गड्डीकी
 कवैरी प्रसादमें दर्शन खुले दंडवत करके श्रीगुरजी आदि
 सब स्वस्वपनके माला सहित खिलावें छडीकुं गेंदकुं खिलावें
 प्रथम चंदनसुं पीछे गुलालसुं पीछे अवीरसुं फेर चौवासुं तापी

छें श्रीअंग खिलायकें गादीकूं तापीछें मालाकूं मोरकूं पिछवाईकूं सिं
 हासनकूं चंदनगुलालसूं खिलावें चंदुवापर २ कयोरी चंदनकी ओरें ४०
 दिन ताई खेलकी भोगकी थारी पिछवाईसूं खेलवे लेंगे उगइकें
 राध्या मंदिरमें छोटी पडगौपें धरें राध्याके पास गुलाल अवीर श्री
 अंगके खिलाइवेमें ते मंदिरमें उडावें ता पीछें फूल मिलायकें पोत
 लीमें गुलाल उडावें एक पाटली फूल उडे अवीर गुलाल उडावें
 टेंग खेलवे ४० दिन ताई एक थारमें फूल विछायके खेलकी सब
 कयोरी धरें गुलाल उड चुके माला गैर छडी मोर थारीमें धरके
 राध्या मंदिरमें धरें श्रीअंगकी माला सिंहासनपै जेवनी ओर धरें
 दोऊ पाटपै भोग आवें झारी १ धरें दूधघरको साज डूकहरो
 हांडी दूधकी दूध पुरी पेडा वासोदो केसरी वरकी मीमे दही माखन
 मिश्री कदली फलादिक लोन मिरच वूरा अनसखडीमें वूदी स
 करपारा कूरके गुंझा मटडी सेवके लडुवा शिरकरनवडी मीमे
 साक चालनी सब तरहकी उत्सवको सधाना.

तुलसी शंखोदक धूप दीप होइ समय होइ भोग सरे आचमन
 मुखवस्त्र बीजा २५ धरें पाट जोकी सरकोवें ४० दिन ताई सोनेको
 केन रूपेके गेद चोगान त्रिष्टी धरें राजभोग आरती होइ झारी
 सब भरी जाय रायनके दशन होय लूम तुरी धरें ४० दिन ता
 ई संध्या आरती पीछें शृंगार वडे होइ गुलालचंदन पांछें
 कोई दिन कुलह दिपारा पेरा दुमाला धरें पागको शृंगार
 होय तब लूम तुरी धरें सो रहे आवें पोढती विरियां आगले
 दिनकी खेली पाग होइ सो बांधें कुलह पीढती समय रही आवे

॥ माघ सुदी ६ ॥

के दिन श्वेत वस्त्र वागा गोल पाग हरी फुलगर श्याम मीनाकी जेडी
 श्रीमस्तकपै कतरा वा लूमकी कलगी शृंगार हलको आखे दिनमें
 गोपालवल्लभमें खिचडीके नग गुंझा मटडी लडुवा आरोगे
 श्रीनाथजी छटसूं खेलें वसंतकूं जेलकूं नहीं खेलें राजभोग-

की थार श्रीनवनीत प्रियाजीकी श्रीबालकृष्णजीकी थार सानके आगे
के चमचा धरके हाथ धोई दंडवत करके श्रीनाथजीकुं खिलाके
ता पीछे श्रीनाथजीकी थार साने

॥ माघ सुद ७ ॥

के दिन गुलाबी झाड़के वरुन कुलह धरे गोपालवल्लभमें नुं
दोके लडुवा

॥ माघ सुद १२ ॥

के दिन राजभागमें दोकल सेवके लडुवा गुडके आरोगे गोपाल
वल्लभमें

॥ माघ सुद १५ ॥

होरी जांडो रोपणीको उत्सव श्वेतचौकनो वागा चोवाकी चोली कह
रकी खिडकीकी पाग तीन पंखडाकी कलंगी दोहरो सारा कतरा
सोनेकी जोड़ी श्रीकंठमें कंये बघनखा सोनेके गादी पै माला सोनेकी
कर्ण फूल २ हत फूल २ सोनेके आभरण पागपै सोनेके शृंगार ह
लको अभ्यंग होई गोपीवल्लभमें लडुवा दोकल धरकी जोड़ी कदी
मींगे शाक राजभागमें मींगे शाक आधा पाटिया एक वडीको
शाक हांडी मलहा दूधके गोपालवल्लभमें मींगे कचोरी आरोगे
रोपणीसुं जौल ताई खेलकी थारमें रंगकी कचोरी धरे तामें जे
ये कचोरी तरावे पिचकारी भरके खंडपे धरे गुलाल उडनुके
पिचकारी माला गेद छडी मोर खेलकी थारमें धरके शय्यामंदिर
में धरे रोपणीसुं खिचडी बंद

॥ फागुन वद १ ॥

के दिन कुंज होई पिछवाई सिंहासनमें होरीके आगले
दिन ताई वा कुंज ताई

॥ फागुन वद ७ ॥

के दिन शीत न होइ तो फुलगर बडी होइ ओढनी ओढे फागुन

फागुन वही ७ श्रीजीके पाट उत्सव की दिगत - वरुन केसरी किता
 रीके जेरीयाके चोवाकी चोली धरें चोली खेलें नही सिंगार मध्य
 को चोली दीखती रहे वागा ^{देरदार} ~~वाक~~ ^{दार} जुले केसरी धरें तीन चंद्र
 काको जोड़ तुरा मीनाके मीनाके न होय तो वरुन के साज सब
 केसरी अभंग होय वंय मलमलको धोयो हुको बदलने छंद
 न होइ तो मोजा त. परगुल बड़े होइ ओर छंद होइ तो
 खेलके समे बड़े होइ जाइ पाछे छंद पडती होइ लाखमोजा
 त. परगुल धरे मोजा त. परगुल बड़े भये बिना मुकुटको
 सिंगार न होइ श्रीनवनौत लाख त. लाखजी मोजा त. पर
 गुल बड़े भये पीछे ओढनी धरे सो ओढनी नित खेलें नही
 त. वागाकी पिछारीकी फडक खेलें नही. ओढनीके नीचे
 आइ जाइ श्रीजीको पाट उत्सव ओर बगीचा त. कुंज होरी
 जेह इतने दिन ओढनी खेलें नित न खेलें गरीके आभरण
 के ऊपरको वरुन ठके सो न गंक्रने ओर मुकुटजा दिन की
 ता दिन सिंगार बड़े होइ काछनी बड़े होइ ता रिशोन देर
 दार वागा धरे त. कोई समे मुकुटके सिंगारमें काछनी बड़े
 भये पीछे सुथन पटका धरें देरदार वागा न धरें पटका
 कवरसू वधे एक छेर टुको राखने एक छेर लंबो राखने
 टेगे न राखने देरदार वागा त. सुथन पटका जो धरे होइ
 त. पागको चोवा सु खिलावने या प्रमान जो जो सिंगार होइ
 ता ता प्रमाने करनो त. श्रीजीके पाट उत्सवके दिन भावना
 पधारे तासु एक दिन पहले छठके दिन सांझके संझमो
 त. सेन भोग ओके ता समे विवारीमे बड़े श्रीमदन मोहनजी
 की चोकी उष्ण कालमें बिछे हैं ताके ऊपर सुपैत उपणी तर
 खासवाकी रुईदार खोली चढाके तापे सुपेव खोली चढावनी
 वाके ऊपरकेसरी उपनी बिछावने केर पिछवारी पीठके त.
 क्रियाके टेकाके लीचे छोटी लकड़ाकी पीठ चोकीके पिछारी

लगावनी फेर गोल तकिया पाटियाकी चौक ऊपर उपनीसुं
 लपेटके धरनी चौकमें दोड़ कोल राखने आभर्न के पर छनो
 बाधवेकुं फेर रुईदार गादी सुपैत खोली चबयके विछावनी फेर
 छोटे श्रीमदनमोहनजीकी रजाई श्रीजीके नखे उपनी किनारी-
 को भयो होइ तामे साटनी फेर वाके भीतर टंड होइ तो खे-
 टो गरुड टंड न होइ तो दतो भीतर विछावनी रजाईके भीतर
 जा प्रमाने श्रीगुरुजी धरे हैं ता प्रमाने धरावनी आत्म सुख
 श्रीमदनमोहनजी धरे हैं ता प्रमाने गादी पे धरावनी श्रीनाथ-
 जीके चौकी पे गादी तकिया न पे धरावनी भावनासु फेर सिं-
 गार धरनी मोतीकी माला सोनेकी माला पिरोजाको हार त माला
 मीनाको हार ओर दोड़ तीन माला फेर गुंजाकी दोतीन माला
 धराने दुहेरी या रीतसुं सिंगार करके श्रीजीकी वंदी जो रहे हे
 इसनी जगे राखनी फेर सिंगारके ऊपर चौरसा ढाकके सिजा-
 मंदिरमें चौकी राखनी सो वा दिन सव मौकु सवेरे श्रीनवनीव-
 लाल पलना झुल चुके तब या प्रमाने दूसरी चौकी पधरावनी
 श्रीनवनीव लालकी आगे स विछाव राखनी भोगमंदिरमें फेर
 भावनाजी सेसु दूसरी चौकी भोगमंदिरमें केसरी उपरना विछाव
 श्रीनवनीव लालकी जेवनी ओर विराजे आगेसुं दूसरी चौकी
 भोगमंदिरमें केसरी उपरना विछावके श्रीनवनीवलालके लिपे
 तैयार राखेनी ओर सखडी अनसखडी सब दुहेरो भोग साजनी ताहा
 ताई श्रीगुरुजी पलना झुल्यो करे फेर भोग साजि चुके श्रीनव-
 नीवलालकी चौकी भोगमंदिरमें पधरावनी ता पे श्रीनवनीवलाल-
 कुं पलनामेसुं चौकी पे भोगमंदिरमें पधरावनी फेर झारी नित-
 प्रमाने भरनी फेर श्रीनाथजीकी चौकी पे भावना पधराई होव ता-
 पलनामेसुं श्रीनाथजीकु भावनामे पधरावने फेर भोगमंदिरमें चो-
 कीकुं पधरावनी श्रीनवनीव त्रियाजीकी चौकी के बराबर दोष झारी
 आभने सामने धरनी फेर श्रीनाथजीकुं फूलनकी माला कडो
 धरावनी ओर सरूपनकुं राजभोग सरे पीछे धरावनी माला

धराये पीछे दंडवत करने फेर खिलवने चंदन गुलाल अवीर
 चोगासूं खिलवने थोरे थोरे और स्वरूपन कुभी थोरे थोरे खिल-
 वने ता पीछे बहुवेगै थोरे थोरे खिलइले फेर थार साजने सब
 ठिकानेके फेर सब स्वरूपन कुं तुलसी समर्पनी. फेर भोगमें चम-
 चा पधरावने समर्पनी फेर सब ठिकाने सांखोदक करने फेर
 धूप दीप करने फेर सरखी अनसरखी भोग रखो होय सा सा-
 जनी. भूलचक तपासनी कुछ रहे न जाइ फेर आरोगे कि-
 वारमंगल होइ जाइ फेर निज मंदिरमें सिंघासन दोयके आगे
 दोऊ श्रीमदन मोहन लाल की चौकी दो बिछावनी दोइ चौकी
 नके बीचमें जगे राखनी त. तीनोंई सिंघासन पे नितनेम प्र-
 माने तैयारी कर राखनी. छडी नितसु दोय अधिकीमें त.
 गेदं नितसु होइ अधिकीमें त. पिचकारी नितसु १ अधिकी-
 में त. खेलके साज सब थारमें तैयार कर राखे चंदन गु-
 लाल अवीर चोगा त. उठाइवेको गुलाल अवीर नितसु इनो
 त. कंकू त. रंग लिखे प्रमाण तैयार राखने पिचकारी सब
 तैयार राखनी चूनेके दीवाल आरवी मुदीया सुधा सब
 तैयार राखनी चांदीकी थारी होय तो चांदीकी नही तो कासे-
 की तैयार राखनी बीजा १ कंकूके टपका कर राखने बीजी
 अधिकीमें तैयार राखने. समें होइ भोग सरे श्रीनाथजी कुं
 तथा श्रीनवनीत प्रियाजी कुं निज मंदिरके बीचमें पधरावने त.
 सब स्वरूपन कुं अपने अपने चौकी पे पधरावने. आचमन मुख
 वस्त्र होइ सब स्वरूप बीडी अपनी अपनी आरोगे पीछे सब स्वरूप
 माला पहरे श्रीजी छोट माला होइ २ वंची प्रमाणे पहरे फेर
 खेल होइ छडी भेद त. आंवाको सोर धरे खेलके भोगकी थारी
 होइ स्वरूपनके आजू काजू उपरनासों ठाकरे धरनी श्रीजी श्री
 नवनीत प्रियाजी कुं महाराज त. बहुवेगै सब खिलवने फेर बडे
 मदन मोहनजी कुं छोटे श्रीमदन मोहनजी कुं या क्रमसूं खिलवने
 गाल मंडली कुं त. पादकाजी कुं नहीं खिलवने दरसन सुखती.

विरिगां रिवलावने श्रीनाथजीके इहा चोकी पे छत्ती गेंद पिचका-
री धरनी ओर सब ठिकाने दरसन खुले ता विरिया सब छडी
गेंद पिचकारी धरनी फेर श्रीजीकू त सब सरूपनकू खेल हो-
य चौके धारोसो गुलाब अबीर उड़ावने फेर मुखारविन्दपे गु-
लाल लग्यो होय ता पोछनी फेर मटे सरूपनकू वेणु वेत्र धराव-
नी फेर तिलककी आरती जोरनी फेर झालेर घंटा शरवनाद
होय श्रीनाथजी सहित सब सरूपनकू दर्पण दिखावने फेर
श्रीनाथजीकू तिलक करनी बीजा दोइ धरने फेर श्रीनवनीत लाल-
कू तिलक होइ बीजा २ धरने बडे श्रीमदन मोहनजीको तिलक
होइ छोट श्रीमदन मोहनजीको तिलक होइ बीजा दो दो धरने
गाल मंडली त पादुकोजीको तिलक नही

फेर मुठिया वार आरती करनी राई लेन करनी नोछाकरक-
रनी फेर बालकनकू त बहु बेगीनकू तिलक करनी त मुखि-
यानकू तिलक करने फेर हाथ धोयके दर्पण दिखावने फेर
वेणु वेत्र बडे करने फेर श्रीनाथजीके त सब सरूपनके
वरण स्पर्श करने फेर बंडोत करके हाथ धोवने फेर प-
रक्रमा करनी फेर श्रीनवनीत लालकू सिंघासनपे पधरावने मा-
ला सब रही आवे वडी न होइ सांझकू संझा आरती पीछे मा-
ला बडी होइ श्रीनाथजीकी छोटी माला रही आवे श्रीजीकू मा-
ला सुधा नितके ठिकाने श्रीनवनीत लालके पास पधरावने और
सब सरूपनकू अपने अपने सिंहासनपे पधरावने फेर श्रीजीकी
बडी माला छडी गेंद सब खेलके थारमें सिजा मंदिरमें धरने फेर
सब आभरण बडे करने फेर भावना पधराई होइ सो पधराय
लेनी भावनाके ऊपरकी गुलाब होइ सो गुलाब बालकनके ऊपर
उपरना श्रीगुरुजीके सोम खरिवर जोर फेर चोकी उगइ लेनी त
पिचकारी खेलके थारमें धर देने सब सरूपनको झारी तदक्की-
में सिंहासनपे यथा क्रमसुं धरनी त तिलकके बीजा झारीके
पास धर देने श्रीजीके बीजा बंटीदी आडी धरने श्रीनवनीत लालके

बीछ श्रीनवनीतलालकी झारीकी आजी धरने फेर उपरना दफ
 देने श्रीमदन मोहनजीके बीछ श्रीमदन मोहनजीकी झारीके
 पास धरने उपरना सुं दफने सब सूरूपनकी इससे सब
 सूरूपनके पास पधरावनी श्रीनाथजीकी झारी प्रसदी जलमे
 उलावनी ओर सब झारीनके ऊपर उपरना दफने श्रीनवनीत-
 लालके पीतावर उठावनी आवाके ओर धरावनी फेर निष्क-
 रीत प्रमाणे उरसन खोलने फेर सब ठिकाने छडी गंद
 पिचकारी धरनी फेर चदनसुं चपाक्रम खिलाने ग्वाल-
 मंडलीकुं शालग्रामजीकुं पादुकाजीकुं सब ठिकाने खि-
 लावनी आही प्रमाण सब ठिकाने गुलालसुं खिलाने सब
 ठिकाने कपोलनपे गुलाल लगावनी फेर आही क्रमसुं अ-
 बीरसुं खिलाने तासमे अबीरको मेढी पेठ पका करी
 फेर आही क्रमसुं चोवासुं सब ठिकाने खिलाने फेर पिछ
 वाई सिंघासन ब्रजभक्त त. सुंड त. चहुना सब ठिकाने खि-
 लावनी कंकुके रंगसुं त. गुलालसुं फेर रंग वैष्णवनेके ऊ-
 पर उठावनी पिचकारी कये रंगसुं फेर अबीर गुलाल
 उठावनी फेर दंडोत करके मुरनारविन्द पोछने फेर खेतको
 साज तीनों ठिकानेको धरनी बालमे छडी गंद मोररंगके
 प्याला पिचकारी सब साजने. आरको सिंघाके पास चो-
 कोपे धरनी त. खेलके भोगकी आरी नितके ठिकाने सिंघा-
 के पास धरनी गुलाल झट कछारनी फेर सिंघासनपैम
 कण्ठासुं गुलाल झट कछारनी गादी तक्रिया सिंघासनपै
 सुं फेर सिंघी पेडा पाट सब सूरूपनके माडने फेर खिले-
 ना चोपड सोनेकी माडनी दर्पण धरनी तिथी धरनी चोकी ध-
 रनी फेर गुलावके फूल कमलके फूल त. श्रीहस्तमें फूल-
 की वेणु त. कली सब ठिकाने धरनी वेणु वेन धरावनी झारि-
 नपेसुं उपरना उदाय लेने लाल दफना उठाइ लेने फेर द-

५६ (६)

र्पण दिखावने फेर आरती करनी आरती होती विरियां फूल
नकी वृष्टि करनी आरती भये पीछे दर्पण दिखावने फेर श्री
हस्त में सुं कली कमल वेणु वेन सो की बड़े करने गुलाब के फूल
बड़े कर लेने माला सगरी रही आवे कड़ी न करनी सांझ कुं
संझा आरती पीछे माला सब कड़ी कर लेनी गुल मडली त-
पादुकाजी की माला कड़ी करनी सिजाके चारसा उगवने क्र-
वासीन कुं नचावने फगवा गुवावने फेर पेग विखवने फेर
अनोसर करने या प्रमाण श्रीनाथजीके पाट उस्वकी सब से-
ता पोहननी महाराज पोचे आप तः बह बेयी न विराजवे
होइ तो मुखिया सब पोचे सांझको नितरीव प्रमाणे सब
पोचनी संख्या आरती पीछे सब गुलाल झार जारनी श्री-
अंग पै थोड़ी सिंगार रहे पोहननी बाजू बंद रहे नितरीत प्र-
माणे रायन आरती होइ अनोसर होइ.

Shri Tatji Maharaj Ki Pustak

Sansthan

Shrimad Gokulnathji Maharaj

Mota Mandir

वही ७ कुं श्रीनाथजीको उत्सव - वस्त्र केसरी डोरियाके पिनारी
दार गोल पाग चोवाकी चोली पिरों जाकी जोड़ी करन फूल दोइ
श्रीकंठमें कंगी दुगदुगी पिरोंजई लूमकी कलंगी शृंगार हलकी
अभ्यंग होइ नित्य भोग नहीं आवत होइ तो न्यारो भोग सरखड़ी
अन सरखड़ी सब राजभोगमें आवें खेले.

गोपीवल्लभमें आरखे पाटिया मीये शाक उत्सवको सधाना प-
लनामें बदाममिश्रीकी डेली सेव राजभोगमें छडीयलद्वार तीन
कूडा मीये शाक पाटिया वडीके शाक २ मिरच फूल.
हांडी मलजा दूधके वासीदी गोपालवल्लभमें खरमंडाकी २ थार
मुगोडाकी छाछ डवरीयानमें शिरवरनवडी वडाकी छाछकी चप-
टैया उत्सवको सधाना चालनी सबतरहकी फदली फलादिक
मिरच वूरा.

उत्थापनमें बदाममिश्रीकी डेली सेव चालनी सब तरहकी.
जो सप्तमीकुं ओढनी ओढें तो अष्टमीकुं मुकुट धरें कोई दिना
गुलालकी चोली लाल खिडकीकी पाग कोई दिना केसरकीचोली
केसरी खिडकीकी पाग कोई दिना पतंगी वस्त्र जरीकी चोली जरी-
की खिडकीकी पाग बंधे तादिना पौढते समय दूसरी पाग बंधे
सेहराको शृंगार होइ मुकुटको शृंगार होइ एक दिन डोलको शृ-
ंगार होइ एक दिन हारीको शृंगार होइ.

॥ फागुन सुद ८ ॥

फागुन सुदी ९ पीछें और दसमी पहलें गकुरजीकुं जा दिन श्रेष्ठ
चंद्रमा होइ ता दिन वगीचा होइ तामें पधारें ता दिन शृंगार मु-
कुट पिरोंजई मीनाको जोड़ी कुंडल आभरण श्रीकंठके पिरोंजई
गादी पै हार माला मीनाको गादी उपरनासु मढी जाय वगीचाकुं
कुंजकुं डोलकुं फांदना बडे शृंगार मध्य ताई वागा ओढनी केसर-
की भरमा वूरीके गोपीवल्लभमें भात छडीयलद्वार पकोडीकी क-
डी मीये शाक. / ११-५-३५-११२२५५२ श्रीप्रभुपुर

राजभोगमें आधो पाटिया मीगे शाक मनोहरके लडुवाको गोपालवल्लभ
 राजभोग सरे पीछे फूलको मुकुट धरे बगीचामें पधारें नौ नौके-
 यामें उत्तरमुख विराजें माला सब स्वरूप पहरे भोग आवें सा-
 मग्री चंद्रकला खोवाके गुंझा दही थडा उपरोष्ठ गिखरन वडी कज-
 को छछ कोडवरा खीर मीगे शाक मैदाकी पूरी पीकेमें चनाकी
 गुंझिया कचौरी छोक्या दही फड फडोया चणा चणाकी दार सेव
 चालनौ सब तरहकी लोन मिरच बुरा कदली फलादिक उत्स-
 वको सधाना होला एक शाक भुजना रायता

दूधकी हांड़ी पैडा वासोंधी (दूध पूरी) मलाई केसरीया बरगी
 मेवा मिठाईकी थार माखन मिश्री मीगे दही सेवती माधुरी
 गुलाबको सीरा गुलाब कतली

चमचा धरे तुरसी शंखोदक धूप दीप होइ समय होइ भोग सरे
 आचमन मुखवरन वीडा २५ गादीके आस पास धरे दहीनखुले
 वीडा आरोगे खेल होय श्रीवक्रजीकुं बालकृष्णजीकुं मदन मोह-
 न जीकुं श्रीमहाप्रभुजीकुं नौ नौके माकुं चंदुवाकुं मुहंवनकुं खेल हो-
 इ चुके गुलाल अवीरके देकरा उडे थारी की आरती सोनेके दी-
 वलाकी होइ नौछावर उपरना रुपैया होय सब स्वरूप मंदिरमें
 पधारें माला बगीचाकी वजी होइ दूसरी माला पहरे गेंदछी
 बगीचा हूमें रहें मंदिरमें हू रहें खेल होइ चुके गुलाल उड-
 चुके आरती होइ राई लोन उतरे खेलको साज नित्यको क्यो-
 रीनमें बगीचाकुं कुंज एकादशीकुं होरीकुं अथरीमें कवेरीनमें
 गुलाल अवीर चंदन चोवा कटोरीमें सासाके अवीर अनेसर होय
 बगीचाके दिन मंगल भोगसुं आगे दिनमें कदली गुंझाको बडे बा-
 ल भोग आरोगे सांसवा गौरा पाग वरन जैसी बांधे

॥ फागुन सुद १० ॥

आज सुं नगार खाना बैठे जैल ताई बजै आज सुं जैलके शृ-

गार होय दिन घटे तो नौमीसुं होय दसमीसुं शृंगार वस्त्र श्वेत
जोरिआके किनारीकी जोड़ी छज्जेदार चीरा लूमकी कलंगी लाल मी-
नाकी जोड़ी श्रीकंठमें कंठे दुगदुगौ गोपालवल्लभमें सेवके लडुवा

॥ फागुन सुद ११ ॥

कुंज एकादशीसुं वस्त्र केसरी जोरिआके श्वेत मीनाकी मुकुट श्वेत
मीनाकी जोड़ी बड़े फोदना गादीपै शृंगार मध्य ताई मकराकृत कुं-
जल कुंज एकादशीसुं गुलाबकी सौरा आरोगे गोपीवल्लभमें राजभो-
गमें अक्षयतृतीया ताई

गोपीवल्लभमें भातकी धार छडीयलदार पकोड़ीकी कढी गोपालव-
ल्लभमें केसरीया घेवर आरोगे राजभोग सरे फूलको मुकुट धरे
तेपी मीनाकी रही आवे सांझकुं केसरी गोल पाग लूम तुरी खेलके
समयकेसरी वरपी भोग आवे खेल होइ केला पल्लवसुद्धां कुं खेलको
साज श्याममंदिरमें क्योराचमें धरे आरतौ भये पीछे नोछवर राई
लोन होय

॥ फागुन सुद १२ ॥

कुं केसरकी खाली वूटीके वस्त्र पिरोजाकी जोड़ी छज्जेदार पाग च-
द्रिका सादा शृंगार हलको गोपालवल्लभमें मेवायी

॥ फागुन सुद १३ ॥

एक दिन गुलाबी छींगके वस्त्र हरे मीनाकी जोड़ी गोल पाग क-
तरा सादा शृंगार हलको गोपालवल्लभमें मनोहरके लडुवा

॥ फागुन सुद १४ ॥

के दिन खाली होय तो लाल रिक्डकीकी पाग भांतिवार किनारीके
श्याम मीनाकी जोड़ी जमावकी कलंगी शृंगार हलको गोपालवल्लभ-
में बूंदीके लडुवा

॥ फागुन सुदी १५ ॥

होली के दिन अभ्यंग जवरना सहित होइ वस्त्र श्वेत नीवने वा-

हरकी खिडकी की पाग चंद्रिका सादा जोड़ी शृंगार बड़े फोंदना वसंत
त तद्रत्

मंगल भोग सुं लेके आखे दिनमें सेवके लडुवाको बड़े बाल भोग
आरोगे:

गोपी वल्ल भमें आखो पाटिया मीगे शाक उत्सवको सधाना पलना
में बदाम मिश्री की डेली सेव

राज भोगमें मीगे शाक छडियल दार तीन कडा कचरीयाकी थारी
हांडी मल्ला दूधके गोपाल वल्ल भमें पवाकी थार घृत वराकी
कचरी उत्सवको सधाना खीर दूनी कडाकी छाछकी चपटिया

उत्थापनमें बदाम मिश्रीकी डेली सेव चालनी सवतरहकी सांझकुं
शृंगार बड़े भये पीछे लूम तुरी धरे श्रीकंठमें सोनेके ताइतकी हमेल
धरे शयन समे माला पहरे दर्शन खुलें गुलाल उड़ें आरती होय
नौछावर.

एकमको दिन खाली होइ तो श्वेत वस्त्र जरीकी खिडकीकी पाग
लूम तुरी सुनहरी लूमकी कलंगी जोड़ी हरी वा लाल शृंगार हल-
को तू आरके दार पागोड़ीकी बड़ी गोपाल वल्ल भमें दहीकी सेवके ल-
डुवा आरोगे:

॥ चैत्र वद १ ॥

डोलकुं अभ्यंग होइ वस्त्र श्वेत दुदामी दुंवीके छप्पेदार पाग चं-
द्रिका सादा जोड़ी फोंदना शृंगार वसंत तद्रत्

गोपी वल्ल भमें आखो पाटिया मीगे शाक उत्सवको सधाना
राज भोगमें हांड़ी नहीं नित्यको दूधको कचरा गोपाल वल्ल भमें धा-
सके लडुवा

और सखड़ी भोजन सखड़ीमें होइ तद्रत् नित्यतामें गैर मठडी
दसमी सुं डोल तांडी शृंगार गोपाल वल्ल भ लिखे तामें गोपाल-
वल्ल भकी क्रम येही

शृंगारको क्रम आगे पीछे होइ जाय है दसमीके शृंगारको ११
कुंजके शृंगारको होरीको डोलको तीनो दिन शृंगार होइ गुलाली छीं.

टाके वस्त्र हरी जोड़ी गोल पाग केरारकी बूंदीके वस्त्र पिरोजाकी जोड़ी
छज्जे दार पाग शृंगार येही होय तिथिको नियम नहीं
श्रीनवनीत प्रियाजी श्रीनाथजीके यहां डोल झुलें तासुं डोलके आग-
ले दिना गुलाल निकसे जरीकी पिछ वाइ बंधे डोलके दिना निज-
मंदिरमें सिंहासनपै तकिया पाट चौकीकी खाली टाट बंदीके सोनेके
चौगात केच चौपड जडाऊ

डोलके दिना श्रीमहाप्रभुजीकं अभ्यंग उवटना सहित होय श्रीग-
कुरजीकं उवटना डोलके दिना नहीं और ठिकाने द्वितीया पाटकं
अभ्यंग होइ किबनेक ठिकाने होरीकं द्वितीया पाटकं श्रीमहाप्र-
भुजीकं अभ्यंग होइ

राज भोगमें आरती होइ चुके डोलको अधिवासन होइ विष्णु
विष्णु श्रुतिआदि उत्तरायणे वसंत ऋतौ चैत्र मासे प्रतिपदि शुभ-
तिथौ शुभ नक्षत्रे शुभ योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषण विशिष्टा-
यां शुभतिथौ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य डोलाधिवासनमहं करिष्ये
झालर घंघ शंखनाद होय डोलमें गकुरजी विराजे पीतांबर उभाय
किंचित् खिलोके श्रीअंगपर गादी पे डोलकी झालरपे झारी १
श्रीजमुनाजलकी भर पडगीन पे भोग आवे दूध बूंदी शकरपारा
गुंझा कूरके मछी सेवके लडुवा बूंदीके लडुवा मनोहरके लडुवा
फेनी श्वेत केसरी दोऊ वावर श्वेतकेसरी दोऊ मेगादी शिरखरनवडी
बीजके लडुवा रसरवारा वडाकी छाछकी चपटीया कांजीकी चपटीया
उत्सवको सधाना पेज केसरी तथा श्वेत वरपी केसरी तथा श्वेत
गुंझिया केसरी तथा श्वेत बांसोदी केसरी तथा श्वेत मलाई मीये
दही खोंकयो दही हांडी मलडा दूधके कदली फलादिक लोन मि-
रच दूरा नित्यको सधाना होइ चालनी सब तरहकी दूध पूरी
पहले भोगमें सामग्रीके चार चार लज आवें एक मलडा दूधको
एक मलडा वडाकी छाछको एक कांजीको एक कुंडेली उत्सवके
सधानाकी एक नित्यके सधानाकी कदली फलादिक लोन मिरच
रा शिरखरनवडी छोटे वासनमें दूध घरकी सामग्रीके बीजके लडु-

के दोड़ दोड़ नग गुंझियानकी एक एक कुंडेली कसोंदीकी एक एक
कुंडेली तुलसी शंखोदक धूपदीप होल भोग आवें।

समय होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र बीज ४ धरें माला पहारें
दरसन खुलें बीज २ बीज २ अरोगें खेल होइ अबीर गुलाल उड
चुके आरती थारीकी सोनेके दीपलकी होइ फूल उडें टेरा खेचें झा
री १ श्रीजमुनाजलकी भरे।

दूसरे भोग आवें सामग्री सब पहले भोग तें दनी एक एक मल-
जा दूधको कांजीको वडाकी छाछको तुलसी शंखोदक धूपदीप स-
धानानकी कुंडेली होल समय होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र

बीज ८ धरें माला पहारें दरसन खुलें बीज ४ अरोगें खेल
होइ गुलाल अबीर उड चुके फूल उडें आरती होइ टेरा खेचें

छेलो भोग आवें कांजीकी चपलीया वडाकी छाछकी चपलीया हांडी
दूधकी सब सामग्रीके टोंकरा एक कुंज उत्सवके सधानाको एक

एक कुंडा नित्यके सधानाको होल तुलसी शंखोदक धूपदीप
समय होय भोग सरे आचमन मुख वस्त्र बीज ३८ की सिकोली

धरें माला पहारें दरसन खुलें बीज ६ अरोगें खेल होइ
अबीर गुलाल उडें फूल उडें आरती होय पटका नोछावर करके

भीवरियानकुं कीर्तनियानकुं खिलाने परिक्रमा देइ राईलोन हो-
इ जोहमेसुं श्रीयकुरजीकुं श्रीबालकृष्णजीकुं श्रीमदनमोहनजीकुं

श्रीमहाप्रभुजीकुं पधरायके चौकी पै गारी सुद्धा पधरावें अंग-
वस्त्र करना आलो सूको हीराकी गारीपै विराजें दोहरों लालसू

तख वागा पहारें पुरा तत्तपाग श्रीमस्तक पै धरें लालफरुख
शाही जरीकी झालरकी ओदनी ओदें तिलक करे श्रीकंठमें मो-

तीकी लड वेग होइ तो अनोसर होइ शीतल भोग धरें झारो
भरें अनोसरको साज पहले धरयो रहै शीतल भोग सरे

आचमन मुख वस्त्र पेंडा लगे ताला मंगल होय अवेर होय तो
अनोसर नहीं होय शीतल भोग उत्थापन भोग सांगको रस सं-

ध्या भोग भेलो धरकें झारो भरे २ श्रीगुरजीकी १ श्री बालकृष्ण
जीकी १ श्रीमहाप्रभुजीकी भोग आब चुकें शय्याकी सेवा करें।
समय होय भोग सरे आनमन मुखवरन वीड ६ धरें आधे दरसन
होइ चुकें पाट सरकावें चोकी खंडसुं लगावें संध्यो आरती थारीकी
सोनेके दीवलीकी होय गाल होय वान होय डबारा सरे शयन
भोग आरोगे छडीयल दार पकोडीकी कबी मीये शाक और सब
नित्यवत् www.vallabhacharyakrupa.org

॥ चैत्र वद २ ॥

द्वितीया पाटकुं अभ्यंग होइ उवटना नहीं नित्य नेगमें गोपाल
बल्ल भमें खिचडीके नग आरोगे कांजीकी चपटीया द्वितीया पाटकुं
शय्यापैसु पलनापरसुं एक सुपेती उवय लेई दोइ सुपेती रहें
भांतिवार वंग विछे तवसुं छींटकी सुपेती सुजनी विछे शीतल
ताई होय तो कसूमल दोहरो वागा धरें वा इकहरो धरें श्रीम-
स्तकपै हीराकी कुलह कामको जोड जोडी हीराकी शृंगार दुहरो
रूप चौदसवत् हीराके कुंडल चोरी धरें।

गोपीबल्ल भमें छडियल दार पकोडीकी कबी राजभोगमें गुडकी क-
वेरी आदा पाचरी बंद दारमें वंगन तथा कोलाके शाकमें आदा पध-
रावनो बंद सांठको रस बंद गुलाबकी मंडली होइ साज टाटबंदी-
को चौपड वेन गेंद चौगान कुंजा वंग आवखोरा रूपचौदसवत् पिछ
वाई जरीकी चंदोवा किमखापको झालरको शीतल ताई होइ तो ज-
रीके वस्त्र मावस ताई धरें

॥ चैत्र शुद १ ॥

संवत्सरको उत्सव - वस्त्र साज साजके श्रीमस्तकपै कुलह चंद्रि-
काको जोड सादा जोडी हीराकी आभरण शृंगार दोहरो रूप चौदसवत्
कुलह पर पान तुरी टीका हीराके कुंडल चोरी धरें गोपीबल्ल भमें छ-
डियल दार पकोडीकी कबी मीये शाक।

राज भोगमें आधो पाटिया वडीको १ शाक मीये शाक हांडी मुखडा दू-
धके गोपाल बल्ल भमें मनोहरके लडुवा मंडली दोहरो सायवानकी